MIMANSA - IMPLICATION

मीमांसा - अर्थापत्ति ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

मीमांसा दर्शन में अर्थापत्ति को पांचवे प्रमाण के रूप में माना गया है।अर्थापत्ति दो शब्दों के योग से बने हैं - 'अर्थ' और 'आपत्ति'।यहाँ अर्थ का अर्थ है 'विषय'और आपत्ति का अर्थ है कल्पना इसतरह अर्थापत्ति का शाब्दिक अर्थ हुआ,'किसी विषय का कल्पना करना'। दो तथ्यों के विरोधाभास को दूर करने के लिए जिस अर्थ की कल्पना की जाए वह अर्थापत्ति कहलाती है प्रभाकर और कुमारिल दोनों ने इसे स्वतंत्र प्रमाण माना है। जब कोई ऐसी घटना देखने में आती है जिसके समझने में कुछ विरोध मालूम पड़ता है तब उस विरोध की व्याख्या के लिए कोई आवश्यक कल्पना किया जाता है और इस तरह की आवश्यक कल्पना को ही अर्थापत्ति कहा जाता है।मान लिया जाए की देवदत्त दिन में कभी भोजन नहीं करता फिर भी दिन प्रति दिन मोटा होता जाता है। उपवास तथा शरीर की वृद्धि में विरोध दिखता है। इस विरोध की व्याख्या के लिए यह कल्पना किया जाता है कि देवदत्त रात में भोजन करता होगा। यद्यपि देवदत्त को रात में भोजन करते नहीं देखा जाता फिर भी ऐसी कल्पना करना अनिवार्य हो जाता है क्योंकि उपवास और शरीर के मोटा होने के साथ संगति नहीं बैठता। इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि अर्थापत्ती वह आवश्यक कल्पना है जिसके द्वारा किसी अदृष्ट विषय की व्याख्या हो जाती है। देवदत्त रात में अवश्य खाता है यह एक अदृष्ट विषय है।

अर्थापत्ती के द्वारा उपलब्ध ज्ञान विशिष्ट प्रकार का होता है क्योंकि यह प्रत्यक्ष, अनुमान या शब्द के अंतर्गत नहीं आता। यह ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता क्योंकि देवदत्त को रात में भोजन करते हुए नहीं देखा गया है। यह शब्द प्रमाण भी नहीं है क्योंकि किसी आप्त वाक्य के द्वारा यह ज्ञात नहीं हुआ है कि देवदत्त रात में खाता है। इसे अनुमान भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि शरीर के मोटा होने में और रात्रि में भोजन करने में व्याप्ति संबंध अर्थात जहां-जहां शरीर का मोटापा रहता है वहां-वहां रात में भोजन करना भी पाया जाता है नहीं है, जिसके बल पर यह जाना जा सके कि देवदत्त रात में भोजन करता है।

दैनिक जीवन में अर्थापत्ति का बराबर प्रयोग होता रहता है उदाहरण के लिए जब हम किसी मित्र के घर जाते हैं जो जीवित है।वह नहीं मिलते।तब हम सोचते हैं कि वह कहीं अन्यत्र गए होंगे ऐसा क्यों सोचते हैं क्योंकि बिना ऐसी कल्पना के किसी जीवित मनुष्य का घर पर नहीं पाया जाना समझ में नहीं आ सकता।इसी तरह वाक्य का अर्थ लगाते समय भी कभी-कभी अर्थापत्ति का सहारा लिया जाता है। यदि वाक्य में कुछ शब्द जुड़े बिना

अर्थ की संगति नहीं बैठती है तब उन शब्दों का आध्याहार कर लेते हैं जैसे- 'लाल पगड़ी को बुलाओ'। इस वाक्य में 'लाल पगड़ी से लाल पगड़ी वाले मनुष्य' का अर्थ ग्रहण किया जाता है। इसी तरह 'वह गांव गंगा जी पर' है। यहां 'गंगा जी पर' का अर्थ 'गंगा जी के तट' से है।

अर्थापत्ति दो प्रकार की होती है - दृष्टार्थापत्ति और श्रुतार्थापत्ति।

दृष्टार्थापत्ति - प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त विषय की व्याख्या के लिए जो कल्पना(अर्थापत्ति) की जाती है उसे दृष्टार्थापत्ति कहा जाता है - जैसे दिन में उपवास करने वाले देवदत्त के मोटापे को प्रत्यक्ष देखकर उसकी व्याख्या के लिए कल्पना केवल रात में खाता होगा दृष्टार्थापत्ति का उदाहरण है। इसी तरह अपने मित्र के घर पर मौजूद नहीं रहने पर यह कल्पना कि वह कहीं बाहर गए होंगे दृष्टार्थापत्ति का उदाहरण है।

श्रुतार्थापत्ति - शब्द ज्ञान(श्रुत ज्ञान) के द्वारा प्राप्त विषय की व्याख्या के लिए जो कल्पना की जाती है उसे श्रुतार्थापत्ति कहा जाता है।उदाहरण के लिए वेद में यह लिखा हुआ है कि जो स्वर्ग की कामना करता है उसे ज्योतिष्टोम यज्ञ करना चाहिए।इससे यह कल्पना कर लिया जाता है कि यज्ञ करने से एक स्थाई अदृष्ट, अपूर्व शक्ति उत्पन्न होती है जो यज्ञादि कर्म के समाप्त हो जाने पर स्वर्ग फल देने के लिए अक्षुण रहती है। यदि ऐसा नहीं माना जाता है तो यह बात समझ में नहीं आती है कि जग यज्ञादि कर्म समाप्त हो जाने पर बहुत दिनों के बाद परलोक में फल वे कैसे देते हैं। इसी प्रकार साधारण वाक्यों को सुनकर उनमें संगति लाने के लिए कुछ शब्दों को जोड़ते हैं अथवा वाक्य के शाब्दिक अर्थ में असंगति देखकर जब लाक्षणिक अर्थ की कल्पना किया जाता है तो उन्हें भी श्रुतार्थापत्ति का ही उदाहरण समझना चाहिए।